समाजीकरण के सिद्धान्त
Theories of Socialization

विभिन्न विद्वानो ने अपने सिद्धान्त प्रतिपादित कर यह दर्शाने का प्रयास किया कि व्यक्ति का समाजीकरण किस प्रकार से होता है। इसकी मानसिक स्थिति क्या होती है। मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने समाजीकरण के सिद्धान्त को आत्म या स्व के विकास के आधार पर समझाने का प्रयत्न किया है। आत्म कोई शारीरिक न होकर एक मानसिक तथ्य है। व्यक्ति के समाजीकरण में 'आत्म' या 'स्व' का अस्तित्व और विकास केन्द्र बिन्दु है।

समाजीकरण से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों के सिद्धान्त:—

(1) कूले का सिद्धान्त:—

अमरीकन समाजशास्त्री कूले ने अपनी पुस्तक 'Human Nature and the social order' में अपनी समाजीकरण सम्बन्धी सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है। उनका सिद्धान्त 'आत्म दर्पण दर्शन सिद्धान्त' (Looking-glass self Theory) के नाम से भी जाना जाता है।

कूले ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों को स्पष्ट करने के सन्दर्भ में किया। इनका मत है कि समाज के सम्पर्क में आने पर ही व्यक्ति के आत्म का विकास होता है। समाज व्यक्ति के लिए दर्पण का कार्य करता है, वह उसमें अपनी छवी देखता है और समाज के लोग उसके बारे में क्या कहते है, इसी आधार पर वह अपने बारे में अपनी धारणा बनाता है। अर्थात अपने बारे में दूसरों की प्रतिक्रिया से ही व्यक्ति के 'स्व' का निर्माण होता है। इसलिए ही कूले इसे 'आत्म दर्पण दर्शन' कहते है।

कूले ने आत्म दर्पण दर्शन प्रक्रिया के तीन चरणों का उल्लेख किया है — (i) व्यक्ति यह सोचता है कि दूसरे उसके बारे में क्या सोचते है (ii) दूसरो के निर्णय के आधार पर वह स्वयं अपने बारे में क्या सोचता है (iii) मैं अपने बारे में सोचकर अपने को कैसा मानता हूँ अर्थात गर्व अनुभव करता हूँ या ग्लानि।

जैसे कोई बालक समाज रूपी आइने में अपने आपको देखता है समाज के लोग उसके बारे में क्या कहते हैं, इसी आधार पर वह अपने बारे में राय बनाता है। इसी राय के आधार पर ही उसमें हीनता या श्रेष्ठता के भाव पैदा होते है। उदाहरणतः जब परिवार के लोग, मित्र या अन्य लोग उसके बारे में यह कहते है कि वह बुद्धिमान, शक्तिशाली, आकर्षक या

मूर्ख, कमजोर, खर्चीला है तो व्यक्ति भी अपने बारे में वैसा ही सोचने लगता है।

किन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि दूसरे हमारे बारे में जो राय बनाते हैं, उसे जिस रूप में हम सोचते हैं उनमें तथा वास्तव में दूसरों द्वारा हमारे प्रति बनायी गयी धारणा में अन्तर होता है। कई बार हम दूसरों द्वारा हमारे बारे में बनायी गयी राय को गलत समझ लेते हैं। अक्सर हम अपने बारे में दूसरों की वैसी धारणा बना लेते है जो समूह के प्रति हमारे मन में होती है। अतः कभी-कभी 'स्व' निर्माण गलत धारणा पर भी आधारित होता है। उदाहरण के लिए, हमारा अपने मित्रों के प्रति अधिक स्नेह होता है, हमारे मित्र कभी हमारी प्रशंसा करते हैं तो हम यह सोचने लगते हैं कि हम प्रशंसनीय है जबकि वास्तविकता यह होती है कि हमारे मित्र हमें इतना योग्य नहीं समझते। इस प्रकार हमारे द्वारा अपने बारे में मित्रों की प्रशंसा के आधार पर बनायी गयी धारणा त्रुटिपूर्ण है।

इस प्रकार कूले के अनुसार व्यक्ति का दूसरों से सम्पर्क होने से ही 'स्व' का निर्माण होता है जो कि समाजीकरण का प्रमुख आधार है। स्व के निर्माण के आधार पर ही व्यक्ति अपना मूल्यांकन करता है, अपने को हीन या श्रेष्ठ समझता है और समाजीकरण की दिशा तय करता है। व्यक्ति समाज का ही प्रतिबिम्ब है।

स्टीवर्ट एवं **ग्लिन** ने कूले के 'आत्म दर्पण दर्शन' सिद्धान्त को निम्न चित्र में इस प्रकार प्रकट किया है :

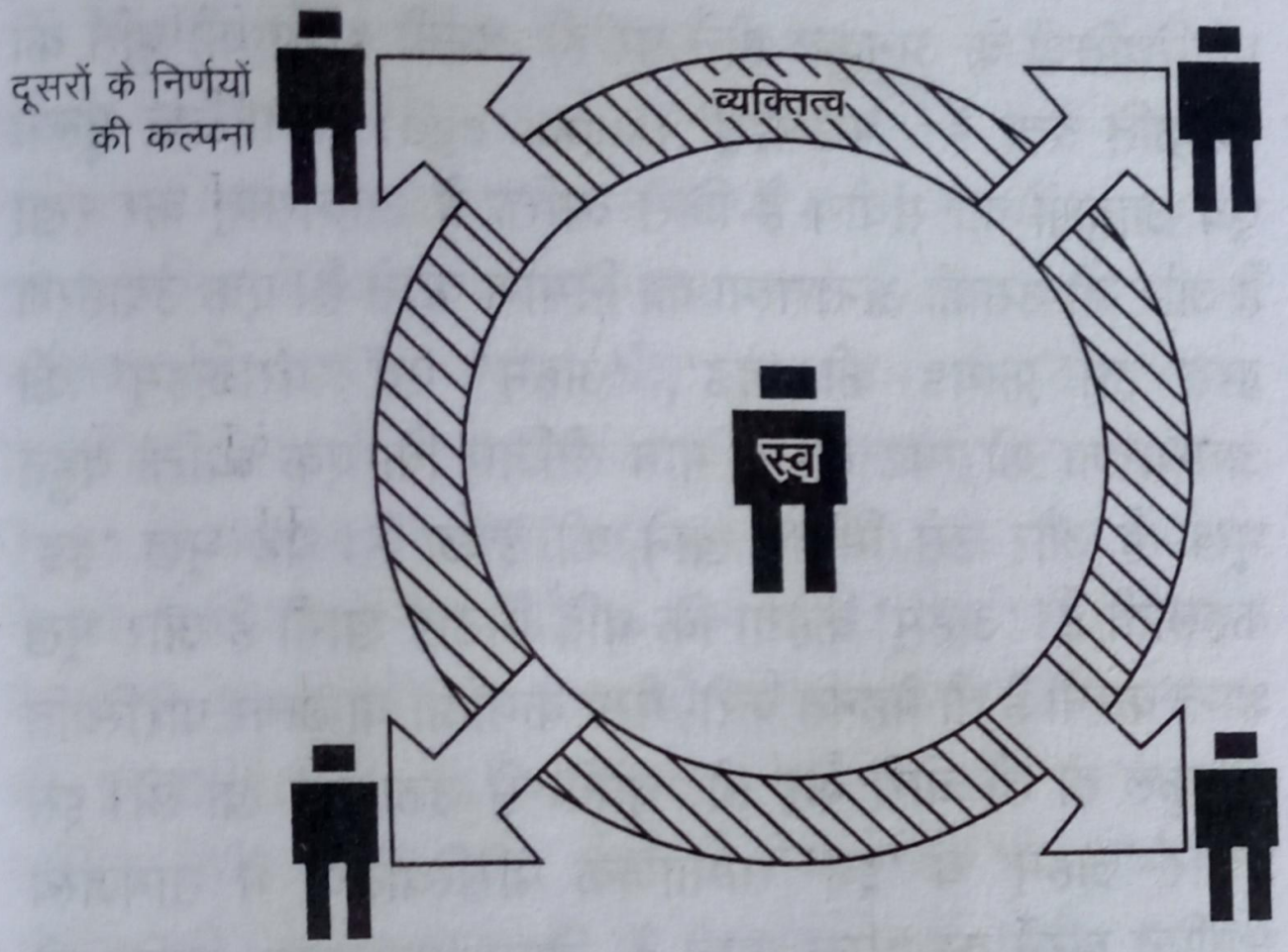

चित्र 3. कूले का आत्म-दर्पण दर्शन सिद्धान्त